www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

औचित्य के अनुरूप-
दृष्टिकोण अपनायें

श्रीराम शर्मा आचार्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

SHRI SANDIPBHAI PATEL,
MOHADEL, GUJARAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

औचित्य के अनुरूप दृष्टिकोण अपनायें

दृष्टिकोण सही होने से तथ्य अपने वास्तविक रूप में सामने आते हैं। सही मार्ग सूझ पड़ता है और काम करने की सही पद्धति अपना सकना संभव होता है। इसमें चूक हो जाने से भ्रम-जजाल में भटकना पड़ता है, न सही रास्ता सूझ पड़ता है और न सही दिशा-धारा हाथ लगती है। इस भ्रान्ति-विकृति के परिणाम भी उल्टे होते हैं और प्रगति के स्थान पर अवगति के गर्त मे गिरना पड़ता है। अस्तु उपयुक्त यह है कि हम अपने-दूसरों के, आकांक्षाओं की-गतिविधियों के संबध में दृष्टिकोण को भ्रांतियों से उबारें और सही दिशा में ले चलने के लिए अपनी विवेक बुद्धि का उपयोग करें।

अपने आप के सम्बन्ध में लोग इतना ही समझते हैं कि नर-पशुओं के झुंड में एक अंधानुकरण करते हुए चलने वाली भेड़, हम भी हैं। जो दूसरे करते हैं, वही हमें भी करना चाहिए। जो दूसरे सोचते हैं, वही हमें भी सोचना चाहिए। आम आदमी इन्द्रिय लिप्साओं की पूर्ति में प्रसन्नता अनुभव करता है और वासना की पूर्ति के लिए निरन्तर ताना-बाना बुनता रहता है। इन्द्रियों में से प्रत्येक को भगवान ने महत्वपूर्ण क्षमताओं से सम्पन्न बनाई हैं और उसका नियोजन महत्व-पूर्ण कामों की पूर्ति के लिए किया जाना चाहिए; किन्तु होता ठीक विपरीत है। जिह्वा को स्वाद चखने और स्वादिष्ट पदार्थों को अधिकाधिक मात्रा में उदरस्थ करने के लिए किया जाता है। फल यह होता है कि पाचन-तन्त्र सामर्थ्य से अधिक भार पड़ने के कारण दुर्बल हो जाता है। अपचजन्य विकृतियों से सड़न का विष पैदा होता है और चित्र-विचित्र रोगों की उत्पत्ति होने लगती है। उनकी पीड़ा ढेरों पैसा खर्च कराती है। कुछ पुरुषार्थ करने योग्य नहीं रहने देती। बात-बात में दूसरों का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आश्रय लेना पड़ता है और अकाल मृत्यु के चंगुल में फँसना पड़ता है। जिह्वा के चटोरेपन की तरह ही कामुकता की सनक मस्तिष्क पर छाई रहती है। उनकी पूर्ति के लिए मर्यादाओं का उल्लंघन चलता रहता है। मस्तिष्क खोखला हो जाता है और ओजस्, तेजस् वर्चस् क्षीण होता चलता है। अपने और सहयोगी को बदनामी तथा व्यथा भुगतनी पड़ती है, सो अलग। इन्द्रियों के सदुपयोग की बात भुलाकर, उन्हें स्वाद चखाने में लगा देने पर समूची काया ही निस्तेज निर्बल हो जाती है। यदि आरंभ में ही दृष्टिकोण संभाल कर रखा जाय और उन्हें रोक-थाम कर बलिष्ठता अर्जित की जाती रहे, तो दुर्बलता और रुग्णता का अभिशाप क्यों सहना पड़े ?

तृष्णा में लालच के वशीभूत होकर मन अधिकाधिक वैभव संचित करने के लिए ललचाता है, फलतः अनीति अपनाने, कुकर्म करने पर उतारू होना पड़ता हैं। ऐसा धन दुष्प्रवृत्तियों में व्यय होता है, कुपात्रों के हाथ चला जाता है और पाप की भारी गठरी सिर पर लादता है। यदि आरंभ से ही यह सोच-समझकर चला जाय कि औसत भारतीय स्तर का निर्वाह करने के लिए ईमानदारी और परिश्रम पूर्वक उपार्जन करना है। सादा जीवन-उच्च विचार का दृष्टिकोण अपनाना है। जो गुजारे में से बचे, उसे विश्व परिवार के पिछड़े लोगों के लिए लगाना है, तो सच्चाई-ईमानदारी से भरा-पूरा जीवन हँसते-हँसाते बीते। विलासिता के लिए लालची बनना और जिस-तिस प्रकार उपार्जन में लगे रहना मनुष्य को अशांति, उद्विग्नता और लोक भर्त्सना के दुष्परिणाम भोगने के लिए विवश करता है।

परिवार छोटा रखा जाय। बहु प्रजनन कोल्हू में पिलने की तरह कष्टकारक और समूचे समाज को कष्ट में डालने वाला, दुष्कर्म माना जाय, तो ढेरों शक्ति बच सकती है और उससे ढेरों परमार्थ बन सकता है। आँखे मूँदकर बच्चे पैदा करते जाना और उन्हें स्वावलम्बी, सुसंस्कारी बनाने की बात भूल कर, दुलारवश अपव्ययी आलसी, दुर्गुणी बनाना—ऐसा कदम है, जिसे उठाने पर पश्चाताप ही पश्चाताप सहना पड़ता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यह दृष्टिदोष और न करने योग्य काम है । यदि आरंभ से ही ध्यान रखा जाय कि चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करने के उपरान्त, एक बार यह मनुष्य जन्म का सुयोग मिला है, इसे आत्म-परिष्कार और लोक-कल्याण में लगाते हुये, सार्थक करना चाहिए । यह ईश्वर की कलाकृति है, जो अनुकम्पापूर्वक सत्प्रयोजनों के लिए उपलब्ध हुई है । यह स्मरण बना रहे, तो महामानव, ऋषि कल्प, सिद्ध पुरुष और देवात्मा अवतार बना जा सकता है । अन्यथा, दूसरे भ्रमग्रस्तों की तरह लोभ-मोह, वासना-तृष्णा, अहंता के भव-बन्धनों में बँधकर स्वयं त्रास पाना और स्वजनों को पतन के गर्त में धकेलना है । समझ ही है, जो उलटी दिशा में चल पड़े, तो मनुष्य दीन-हीन, पतित-पापी बना रहता है और उद्विग्नता, भर्त्सना, प्रताड़ना सहते हुए इस मणि मुक्तकों जैसे जन्म को, कौड़ी मोल गँवाता है ।

दूसरों के दोष देखते और गिनते रहने से, प्रतीत होता है कि यह संसार दुष्टता से सना और पतन पराभव से भरा है । तब ऐसे ही लोग सिमटकर इर्द-गिर्द जमा हो जाते हैं और दुर्मतिजन्य दुर्गति का माहौल बनाते हैं । यदि अपना दृष्टिकोण सुधरे, तो श्रेष्ठता और सज्जनता की गतिविधियों को खोजा जाय और सदाशयता से वास्ता पड़े । वैसे ही लोग सम्पर्क में आयें और उस मिलन के फलस्वरूप कल्याणकारी क्रिया-कलाप बन पड़े, स्वयं सुखी रहा जाय और दूसरों को सुखी बनाने वाले प्रयत्नों में निरत रहा जाय । इस संसार में भला-बुरा सब कुछ है । हमारा अपना चुम्बकत्व जिस स्तर का होता है, उस स्तर के लोगों से घनिष्ठता बनती हैं और तदनुसार गतिविधियाँ चलती एवं परिस्थितियाँ विनिर्मित होती हैं । उद्यान में, भौंरों को फूलों की सुगन्ध और गुबरीले कीड़ों को खाद की दुर्गन्ध का अनुभव होता है । इसे दृष्टिकोण का प्रतिफल ही कहा जा सकता है । अहंकार से ग्रसित व्यक्ति सज-धज, साज-सज्जा में लगा रहता है । अमीर या रूपवान दिखने के लिए शृंगार को साथ ओढ़ना और अपव्यय में पैसा गवाँता है -ऐसे लोग ओछे, बचकाने, मनचले कहलाते है और व्यभिचारी, दुराचारी, अहंकारी गिने जाते हैं । ढेरों समय और धन इस विडम्बना के लिए लुटाते रहने पर भी, लोगों की आँखों से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गिरते हैं। ईर्ष्या का कारण बनते हैं। बहकाने-फुसलाने वाले पीछे लगते हैं और चाटुकारिता के जाल में फँसकर अपने पास जो कुछ है, लूट ले जाते हैं। स्त्री हो या पुरुष सज-धज में अपनी महत्ता सोचने के उपरान्त, जो ठाट-बाट बनाते हैं, उससे उन्हें हर दृष्टि से घाटा ही घाटा पड़ता है। यदि पहले से ही सादा जीवन-उच्च विचार का सिद्धान्त हृदयंगम कर लिया जाय, तो अपनी आँखों में अपनी इज्जत बढ़ेगी और दूसरे भी श्रद्धा तथा सम्मान की दृष्टि से देखेंगे। अपना स्तर उठाना या गिराना हर किसी के अपने हाथ की बात है। सोचने का तरीका जैसा भी होगा, उसी स्तर का क्रिया-कलाप चलेगा, वैसी ही परिस्थितियाँ बनेंगी और वैसा ही प्रतिफल सामने आ खड़ा होगा।

प्रदर्शन के बचकाने का ताना-बाना बुनते रहने वाले, यह भूल जाते हैं कि हर व्यक्ति अपने-अपने काम में व्यस्त हैं, उसे उतनी फुरसत कहाँ कि किसी की सज-धज को गौर से देखने के लिए अपना मस्तिष्क खाली करे या समय बिगाड़े। अहंकार प्रदर्शन प्रिय लोग यही समझते रहते हैं कि दुनिया खाली बैठी है और हमारी बन-ठन को ही आँखें पसार कर देखती-आश्चर्य से चकित होती और सुन्दरता अथवा अमीरी का गुणगान करती फिरेगी। इस मूर्खता को आरंभ से ही छोड़ रखा जाय और सज्जनोचित सादगी का आवरण ओढ़ रखा जाय, तो सम्मान भी बढ़ेगा और पैसा तथा समय भी बचेगा।

दूसरों को ठगा जाय या उन्हें सत्परामर्श एवं सज्जनोचित सहयोग देकर आगे बढ़ाया जाय, इन दोनों दृष्टिकोणों में से, जो शालीनता के पक्षधर हैं, उनके मित्र और सहयोगी बढ़ते जाते हैं। समय पड़ने पर बदले में सहयोग लेकर सामने आते हैं; किन्तु यदि ठगने का व्यवहार रखा गया है, तो काठ की हाँडी एक बार ही चढ़ेगी। प्रथम प्रयास में अनुचित लाभ उठा लिया जायेगा; किन्तु वह आजीवन सतर्क रहेगा और अवसर मिला, तो बदला लेने से भी नहीं चूकेगा। सज्जनता की नीति अपनाने में आरम्भ में तो, ऐसा लगता है कि हम दूसरों की सेवा-सहायता करके घाटे में रहे; किन्तु समयानुसार वह भलमनसाहत फलती-फूलती है, यश

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बढ़ाती है और अनेकों की आँखों में प्रामाणिकता बनकर बस जाती है। ऐसे लोगों को सहयोग का अभाव नहीं रहता। जिन्हें अधिक लोगों का अधिक सहयोग मिला है, वे ही उन्नति के उच्चशिखर तक चढ़े हैं और कठिन कामों में सफल हुए हैं।

जीना लाख वर्ष है, ऐसा सोचने वाले विलास में डूबे रहते हैं। जिस-तिस प्रकार की सम्पत्ति संग्रह करते, दूसरों को सताते रहते हैं, पर जिन्हें इस बात का बोध है कि क्षण-भंगुर काया की कोई स्थिरता नहीं, मौत कभी भी आ खड़ी हो सकती है, वे अपने एक एक क्षण का सदुपयोग श्रेष्ठ कामों में नियोजित करते हैं। सोचते हैं, भगवान के दरबार में अपराधी की तरह उपस्थित न होना पड़े; वरन् इस रूप में वहाँ पहुँचें कि प्रशंसा सुनने को मिले। अगली बार ऐसे साधनों समेत संसार में भेजा जाय कि अपनी कर्तव्य-परायणता हर क्षेत्र में भविष्य को उज्ज्वल बनाती चले।

दूसरों पर निर्भर रहने की अपेक्षा, हमें स्वावलम्बी और स्वाभिमानी बनना चाहिए। आत्म गौरव को किसी भी कारण गिरने न दें। भगवान ने मनुष्य के भीतर क्षमताओं के पुंज समाहित कर रखे हैं, आवश्यकता उन्हें जगाने और अभ्यास में लाने भर की है। आत्मबल सबसे बड़ा बल है। आत्म सुधार को संसार सुधार के समतुल्य समझा जाना चाहिए। आत्म विश्वासी की ओर सब लोग विश्वास करते हैं। जिसे अपने ऊपर भरोसा नहीं, उसकी ओर कौन भरोसा करेगा? जो अपनी सहायता आप करता है, ईश्वर भी उसी की सहायता करता है-इस तथ्य को हमें गिरह बाँध कर रखना चाहिए।

नया युग-बदल रहा है। इसमें दूरदर्शिता-विवेकशीलता का आधार पर, जो बातें खरी उतरेंगी, उन्हीं को मान्यता मिलेगी, कोई प्रथा बहुत समय से प्रचलित है, इसलिए उसे आगे भी चलते रहना चाहिए इस तर्क एवम् अनुभव को अगले दिनों कोई भी मान्यता नहीं देगा। इसलिए औचित्य इसी में है कि बदलाव के लिए विवश किये जाने की प्रतीक्षा करने की अपेक्षा, जो निश्चित भवितव्यता है, उसके अनुरूप अपनी मान्यताओं को स्वयं ही ढाल लें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जन्म-जाति के आधार पर चलने वाले ऊँच-नीच, और बरते जाने वाले भेद-भाव को अगले दिनों कोई मान्यता मिलने वाली नहीं है। मनुष्य मात्र एक बिरादरी के माने जायेंगे। गुण, कर्म, स्वभाव के अनुरूप-प्राचीन काल के अनुरूप भी वर्ण बन सकते है; पर उसमें जन्म-जाति की कहीं, कोई मान्यता न होगी। रोटी-बेटी के व्यवहार में व्यवसाय या शिक्षा-संस्कृति का विभेद हो सकता है, पर जन्म-जाति के अनुसार कोई किसी को नीच-ऊंच न कह सकेगा और न इस कारण भेद-भाव, विलगाव रखेगा।

इन दिनों स्त्रियों को दूसरे दर्जे का नागरिक माना जाता है, उनका मानवी अधिकार नहीं के बराबर है। दहेज के नाम पर लड़कों की खरीद-फरोख्त चलती है। छोटी बिरादरी वाले लड़कियाँ बेचते हैं। शादियों में अनावश्यक धूम-धाम के सरंजाम जुटाये जाते हैं। दहेज कम मिलने पर वधुओं का उत्पीड़न और उनकी हत्यायें, आत्म-हत्यायें आये दिन सुनने को मिलती हैं। यह कुरीतियाँ अगले बीस वर्ष में जड़-मूल से समाप्त हो जायेंगी। नर और नारी समानता उपलब्ध करेंगे। न नर को घूँघट मारना पड़ेगा, न नारी को। नर की भाँति नारी भी व्यवसाय में हाथ बँटायेगी और जरूरत पड़ी तो, वह भी नौकरी करके आजीविका उपार्जित कर सकेगी। दोनों पक्षों में से, कोई भी दूसरे पक्ष को अपना स्वामी नहीं मानेगा; वरन् सम्मानित-सहयोगी कहेगा। दबाव से नहीं, प्रेम से एक दूसरे के वशवर्ती सहयोगी रहेंगे। दोनों के लिए एक जैसे कानून और प्रचलन होंगे। पतिव्रत की तरह पत्नी-व्रत की भी अनिवार्यता मानी जायेगी। यदि इसमें ढील मिलेगी, तो वह दोनों को। कड़ाई बरती जायेगी, तो दोनों पर समान रूप से। मध्यकाल के अन्धकार युग में नर को स्वामी और नारी को दासी माना जाता रहा। समझना चाहिए कि अब उस असमानता का अंत आ गया। अच्छा हो, यह प्रचलन बिना मनोमालिन्य, कलह विग्रह उत्पन्न किये ही, चल पड़े। अनुचित रीति-रिवाज इसलिए चलते नहीं रह सकते कि वे पुराने हैं। पुरानापन किसी बात में प्रामाणिक और नयापन अप्रामाणिक नहीं माना जायेगा। अपनाया वही जायेगा, जो उचित एवं न्यायपूर्ण होगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अगले दिन, नर और नारी की पूर्ण समानता के हैं । इस सुनिश्चित संभावना को हम समय रहते, स्वेच्छापूर्वक स्वीकार कर लें, इसी में बुद्धिमानी है ।

धनी और निर्धन का भेदभाव भी चलने वाला नहीं है । गरीबी और अमीरी का भेदभाव कहीं देखने को न मिलेगा । योग्यता भर करना और आवश्यकता भर लेना, अर्थ विनियोग की यही प्रथा चलेगी, निर्वाह का औसत स्तर रहेगा । अधिक कमाई पिछड़े लोगों की अथवा समूचे राष्ट्र की संपदा मानी जायेगी । असमानता उत्पन्न करके दुर्व्यसनों को फैलाने ईर्ष्या-द्वेष की आग धधकाने की छूट किसी को भी न मिल सकेगी । कोई अधिक काम करने की योग्यता रखता है, तो उसका अर्थ यह न होगा की वही उस वैभव को मन चाहे ढंग से खर्च करे । विश्व-परिवार बनने जा रहा है और उसमें सभी नागरिक एक परिवार के सदस्य की तरह रहेंगे तथा एक जैसी स्थिति में-एक जैसे स्तर में-रहते हुये निर्वाह करेंगे । यही प्रचलन सतयुग में था, यही अब नये प्रज्ञायुग में भी रहेगा । सज्जनता-शालीनता का मर्यादाओं का-उल्लंघन किसी को भी न करने दिया जायेगा । एकता और समता के आधार पर नया समाज बनने जा रहा है । नये युग के इस प्रवाह में कोई भी व्यतिरेक न कर सकेगा । राज्य शासन, समाज का गठन, अन्तरात्मा का जागरण—यह सब मिलकर कुप्रचलनों को जड़-मूल से उखाड़ फेकेंगे-यह सुनिश्चित संभावना है ।

अपना दृष्टिकोण, अपना मन-मस्तिष्क, हमें अभी से इस स्तर का गठित करना चाहिये, ताकि दूरदर्शी विवेकशीलों में अपनी गणना हो । इन संभावनाओं में सहयोगी न बनकर यदि हम व्यवधान उत्पन्न करेंगे, तो तूफान से टकराने की तरह हम बल पूर्वक उलट दिये जायेंगे, घाटे में रहेंगे और पश्चाताप करेंगे ।

क्रमांक—२४० । युगान्तर चेतना प्रेस—शांतिकुञ्ज, हरिद्वार । मूल्य—४० पैसा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org